IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 23, Issue 7, Ver. 1 (July. 2018) PP 70-72
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

बच्चों के विकास में बदलते परिवेश का मनोवैज्ञानिक प्रभाव

डॉ अर्चना वर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
साइकोलॉजी डिपार्मेंट डी जी (पी.जी.) कॉलेज कानपुर

बच्चे किसी भी समाज के भविष्य होते हैं । बच्चों को केंद्र में रखकर ही कोई समाज या देश अपने राष्ट्र निर्माण की भावी संरचना करता है क्योंकि बच्चे राष्ट्र की अमूल्य धरोहर एवं भावी संसाधन तथा सांस्कृतिक विरासत होते हैं ।

बर्षों पहले हमारे समाज में कई कुरीतियाँ थी जिसमें व्यक्ति जीता तो था पर बुरी स्थिति में । कई कुरीतियाँ तो ऐसी थी जिसमें साँस तो अपनी होती थी किंतु साँसों पर पहाड़े समाज के होते थे । खुशी तो थी पर कुछ बंधन भी थे जिनको तोड़ पाना संभव नहीं था । उस समय की सबसे बड़ी बात थी कि संस्कार और संस्कृति सातवें आसमान पर थे । कुछ कुरीतियाँ होते हुए भी ये दमघोंटू नहीं थे । अगर हम वर्तमान समय की बात करें तो सामाजिक आधारों में न रीति और न ही नीति रह गई है जिसका सीधा असर बच्चों के विकास पर पड़ रहा है । टाँग खींचना , दूसरों की भवनाओं से खेलना इस दौर में लोगों की आदत सी हो गई है । संस्कार और संस्कृति शब्द तो आज के बच्चों के लिए बेजान से हो गए हैं और ये खुद की बस्ती में ही गुम हो गए जैसे किनारों पर आकर लहरें गुम हो जाती हैं । परिवार शब्द के मायने बदल गए हैं । पहले परिवार में माता - पिता , भाई - बहन , दादा -दादी , चाचा - चाची के अतिरिक्त चचेरे भाई बहन भी रहते थे जबकि आधुनिक परिवेश में परिवार का अर्थ माता - पिता एवं उनके एक से दो बच्चे ही रह गए हैं । पहले लोग संयुक्त परिवार में रहकर भी खुश थे और आज भारत में लोग एकल परिवार में रहकर भी खुश नहीं रह पा रहे हैं । बेटे को बाप नहीं समझ रहा और बाप को बेटा नहीं समझ रहा । सब एक -दूसरे को बोझ समझते हैं । आज के परिवार में बस भागम भागी है जो प्रतिदिन सुबह होते ही शुरू हो जाता है और शाम को सोने पर खत्म होता है । (1)

समाज में जिस तरह की घटनाएँ आज घट रही है उसका मूल कारण व्यक्तियों के मौलिक चरित्र का पतन है जो इस आधुनिक युग में होना स्वभाविक सी बात है । आज जिस तरह पाश्चात्य संस्कृति बच्चों के जीवन एवं संस्कृति पर कुप्रभाव डाला है ये उसी का नतीजा है । आज हम अपने मूल संस्कृति से भटक गए हैं । हमारा प्रभात , रहन -सहन , सोच -विचार सब पूरी तरह से बदल गया है ।आज ये विचारणीय प्रश्न है कि आखिर हमारी पारिवारिक और सामाजिक एकता में इतनी कमी क्यों आ गई है । आज देश में एक परिवार के सदस्य एक होकर नहीं रह पा रहे तो हम किस बल पर देश की एकता और अखंडता की बात कर रहे हैं ? विचार करना होगा कि हम आज ऐसे कौन से चक्रव्यूह में फँस गए हैं जिसके कारण हमारा समाज आज ऐसी दिशा में जा रहा है जिसका कोई आदि - अंत नहीं । हमें अपनी दिशा और दशा को बदलना होगा और अपनी मूल संस्कृति जिससे कि हम भटक गए हैं उसपर लौटना होगा । सामाजिक जीवन के उन पुराने आदर्शों का अनुसरण करना होगा जो हमारी संस्कृति के नींव रहे हैं । (2)

बालक के जीवन के प्रारम्भिक काल में यदि परिवार का वातावरण सामाजिक प्रत्याशयों के अनुसार रहा है तो बहुत कुछ संभावना है कि बड़ा होकर बालक के सामाजिक व्यक्तित्व का विकास होगा । बालक प्रारम्भिक अनुभवों को परिवार का आकार भी महत्वपूर्ण ढ़ंग से प्रभावित करता है । बालक का परिवार में क्या स्थान है , बालक के परिवार के सदस्य उसके साथ किस प्रकार का व्यवहार करते हैं , बालक के माता -पिता बालक से क्या आशा रखते हैं ;इस प्रकार के कारक बालक के प्रारंम्भिक सामाजिक अनुभवों को अधिक महत्वपूर्ण ढ़ंग से प्रभावित करते हैं तो इस अवस्था में उसमें जो सामाजिक अनुभव विकसित होंगे वो विपरीत प्रकार के होंगे । इस प्रकार के बालक का व्यवहार अंतर्मुखी प्रकार का हो सकता है परन्तु

यदि बच्चे को उसके परिवार से अच्छा व्यवहार मिलता है तो वह आगे बहुर्मुखी प्रतिभा का धनी व्यक्ति बन सकता है । इस अवस्था में उसमें सामाजिकता के गुण का विकास तीव्र गति से होता है । (3)

सामाजिक विकास एक क्रमिक प्रक्रिया है । जीवन की प्रत्येक अवस्थाओं में यह भिन्न - भिन्न गति से चलता रहता है । समाजीकरण की प्रक्रिया बच्चों को समाज में रहने योग्य बनाती है क्योंकि इसके द्वारा ही व्यक्ति सामाजिक रीति - रिवाज , नियमों , सांस्कृतिक तथा अन्य सामाजिक गुणों को सीखता है । अपने वर्ग तथा समुदाय से परिचत होता है तथा अपने जीवन मूल्यों व अन्य सामाजिक गुणों को सीखता है । अपने वर्ग तथा समुदाय से परिचित होता है तथा अपने जीवन मूल्यों एवं लक्ष्यों को पहचानता है । इसी प्रकार बालक के भीतर सामाजिक गुणों और व्यवहारों की उत्पत्ति ही सामाजिक विकास है । समाज में उत्पन्न होने , विकसित होने तथा पालन - पोषण होने के कारण बालक निरंतर समाज के व्यक्तियों के अचार - विचार और शिक्षण द्वारा खासकर विद्यालय द्वारा प्रभावित होता रहता है जिससे प्रारम्भ से ही उसका सम्पूर्ण शिक्षण सामाजिक मान्यताओं के अनुसार ही होता है ।फलस्वरूप सामाजिक विचार और व्यवहार उसके मस्तिष्क में ऐसे स्थाई रूप से विद्यमान हो जाते हैं कि वह समाज के सीमा के बाहर कोई भी कार्य करने की सोच नहीं पाता है । इस प्रकार जीवन की विभिन्न अवस्थाओं को पार करते हुए वह स्वस्थ सामाजिक जीवन प्राप्त करता है । (4)

अपराधी प्रवृति के बालकों के उपचार में मनोवैज्ञानिक विधि का प्रयोग होता है । इसमें दमित इच्छाओं को मनोविश्लेषण विधि से समझकर उन्हें दूर किया जाता है । उपचार की एक और विधि "पर्यावरण विधि " है जिसमें अपराधी बालक का सामाजिक उपचार किया जाता है । इसमें अभिभावकों का बच्चों के प्रति उत्तम व्यवहार , उनकी रुचियों के प्रति सहानुभूति , अपराधी बालक को अपनी बात कहने का अवसर देना , उत्तरदायित्व सौंपना , सुरक्षा प्रदान करना , पारिवारिक त्रुटियों को दूर करना , बुरे लोगों से दूर व अच्छे दोस्तों के साथ रखना तथा उन्हें समुचित नैतिक एवं सामाजिक शिक्षा प्रदान करना आदि बातों की बाल अपराधियों के उपचार की दिशा में अनुशंसा की गई है । (5)

नैतिक शिक्षा मनुष्य के जीवन में बहुत आवश्यक है । इसका आरम्भ मनुष्य के बाल्यकाल से ही हो जाता है । कभी झूठ नहीं बोलना , बड़ों का आदर करना , सब पर दया करना , चोरी न करना , हत्या जैसे कार्य न करना , सच बोलना , सबको अपने समान समझते हुए उनसे प्रेम करना , सबकी मदद करना , किसी की बुराई नहीं करना आदि कार्य नैतिक शिक्षा या नैतिक मूल्य कहलाते हैं । सभी धर्म ग्रंथो का उद्देश्य रहा है कि मनुष्य के अंदर नैतिक गुणों का विकास करना ताकि वह मानवता और स्वयं को सही रास्ते ले जा सके। यदि शिक्षा में नैतिक मूल्यों को महत्व दिया जाता है तो विद्यार्थी सही मायने में मनुष्य बन सकता है । ये मूल्य उसे सीखते हैं कि उसे समाज में बड़ों के साथ , अपने मित्रों के साथ एवं अन्य लोगों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए । किताबों में वर्णित कहानियों और महत्वपूर्ण घटनाओं के माध्यम से उसके मूल्य को संवारा व निखारा जा सकता है । (6)

किसी भी इंसान के जीवन में मूल्यों का अहम योगदान रहता है क्योंकि इन्हीं के आधार पर अच्छा -बुरा या सही - गलत की परख की जाती है । इंसान के जीवन की सबसे पहली पाठशाला उसका परिवार ही होता है और परिवार समाज की धूरी है । उसके बाद उसका विद्यालय जहाँ से उसे शिक्षा हासिल होती है । परिवार , समाज और विद्यालयी वातावरण के अनुरूप ही एक व्यक्ति में सामाजिक गुणों और मानव मूल्यों का विकास होता है । (7)

आज समाजिक मूल्यों का स्तर गिरता जा रहा है । सभी प्रकार के मानवीय मूल्यों के घटने में चरित्र पतन सबसे बड़ा कारण है । आज के बच्चों का चरित्र क्यों नष्ट व भ्रष्ट हो रहा है यह एक ज्वलंत व विचारणीय मुद्दा है । (8)

आज के बदलते परिवेश में नैतिकता और सामाजिकता विकसित किये जाने की घोर आवश्यकता है । यह बात ध्यान देने योग्य है कि आज कहीं न कहीं बच्चों में नैतिक और सामाजिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है । सवाल यह है कि इस परिस्थिति का जिम्मेदार कौन है ? परिवार , समाज और समाज का ही अंग विद्यालय कहीं न कहीं ये सभी जिम्मेदार हैं ।

सबसे बड़ी जिम्मदारी स्कूल और शिक्षकों पर है जिसे देश के लिए भावी कर्णधारों का निर्माण करना है । प्रयास शुरू करने होंगे , स्वयं से ही बच्चों के सामने रोल मॉडल बनाकर क्योंकि बच्चों में अवलोकन और अनुकरण की तीव्र प्रवृति होती है । उनके समक्ष समयबद्ध होकर दिखाना , आपस में एक -दूसरे को हाथ जोड़कर अभिवादन करना , बच्चों को बताया जाना कि अपने से बड़ों का घर से बाहर जाते समय अभिवादन करना व उनकी स्वीकृति लेना , घर से बाहर भी अगर परिचित बड़े मिले तो उनको विनम्रता से नमस्ते करना इत्यादि । साथ ही किसी की भी हर संभव मदद करना , परोपकार की भावना को विकसित करना , बच्चों के सामने नैतिकता संबंधित उदाहरण प्रस्तुत करने से बच्चों में सामाजिकता की भावना विकसित होगी और व्यक्तित्व में भी निखार आएगा । (9)

संदर्भ :-

1. http://m.dailyhunt.>india>hindi भारतीय समाज का बदला स्वरूप , 17मार्च 2018
2. synques.net>demo>viewbasicnews बदलते परिवेश और हमारे सामाजिक मूल्य का होता पतन , 28 सितम्बर 2013
3. श्रीवास्तव , डॉ0 डी0 एन0 एवं डॉ0 प्रीति वर्मा , बाल मनोविज्ञान : बाल विकास , अग्रवाल पब्लिकेशन्स, पंद्रहवाँ संस्करण 2007 /2008, पृ. - 317
4. अग्रवाल , डॉ0 नीता एवं डॉ0 वीणा निगम , मातृकला एवं शिशु पालन , अग्रवाल पब्लिकेशन्स , चतुर्थ संस्करण - 2007 -8 , पृ. -130 - 131
5. वर्मा एवं पाण्डेय , आधुनिक गृह -विज्ञान : मानव विकास , साइंटिफिक बुक कम्पनी - 2004
6. https://brainly.in>hindi बदलते परिवेश और हमारे सामाजिक मूल्य , 1 अक्टूबर 2019
7. https://www.jansatts.comm.price , जीवन के मूल्य , 11 नवम्बर 2015
8. http: www.hindivarta.com आज का समाज और नैतिक मूल्य पर निबंध , 4 सितम्बर 2016
9. https://m.facebook.com आज के बदलते परिवेश में नैतिकता और गुणवत्ता शिक्षा : एक पहल , 25 फरवरी 2016